शब्द एवम् राग विस्तार

डॉ. पवन राज चौधरी

राग शब्द मूलतः संस्कृत भाषा का है इसकी उत्पति रञ्ञजू भावे घञ्ञ् इस प्रकार हुई है इस उत्पत्ति से स्पष्ट होता है कि रंजकता से ही राग है, किन्तु राग के अन्य कई अर्थ है।

राग के कई अर्थ हैं इनका प्रयोग अधिकतर भिन्न भिन्न अर्थों में भरत ने अपने नाट्य शास्त्र में तथा कालिदास ने अपने काव्य में किया है। संगीत में यह शब्द रंजकता से जुड़ा हुआ है, राग का अर्थ है "संगीत के राग तथा रंजकता" अर्ध के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। राग शब्द परिभाषिक रूप से सर्वप्रथम मतंग की बृहदेशी में प्रयुक्त हुआ है। राग गीति का वर्णन करते समय मंतग ने कश्यप की परिभाषा को उद्घृत किया है।